प्रकाशकीय

(अष्टम् संस्करण)

'बृहज्जिनवाणी संग्रह' का यह अष्टम् संस्करण प्रकाशित करते हुए हम अत्यन्त गौरव का अनुभव कर रहे हैं। अल्पकाल में ही सात संस्करणों के माध्यम से इसकी ३२ हजार ८०० प्रतियों का समाप्त हो जाना इसकी
लोकप्रियता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। समाज की महती माँग के कारण इसका यह संशोधित एवं संवर्धित अष्टम् संस्करण मुद्रित कराया गया है।

इस संकलन के विषय में अधिक क्या कहा जाए, यह तो गागर में सागर के समान है। बहुत समय से ऐसे पूजन-पाठ संग्रह की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी, जिसमें अधिकतम पूजन-पाठ, विनती, स्तोत्र एवं
भावनाऐं व्यवस्थित तथा बडे टाइप में मुद्रित की गईं हों, ताकि आबाल वृद्ध सभी वर्ग के लोग इससे लाभान्वित हो सकें। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए इस 'बृहज्जिनवाणी संग्रह' का प्रकाशन किया गया है।

संकलित सामग्री को सुसम्पादित कर व्यवस्थित रीति से मुद्रित कराने हेतु हमारे अनुरोध को डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने स्वीकार कर हमें आवश्यक निर्देश एवं मार्गदर्शन प्रदान किया है। प्रथम संस्करण मुद्रित हो जाने के उपरान्त डॉ. साहब ने इसे पुन: आद्योपान्त बारीकी से देखकर आवश्यक संशोधन व परिवर्धन किया है। सप्तम् संस्करण के प्रकाशन तक हमारे पास जिन-जिन महानुभावों के सुझाव प्राप्त हुए, उनको दृष्टिगत रखते हुए इस संस्करण में सभी आवश्यक सुधार कर इसे कम्प्यूटर द्वारा कम्पोज कराकर आकर्षक कलेवर में मुद्रित कराया गया है।

माननीय पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल ने इस संकलन की शोध खोजपूर्ण प्रस्तावना लिखकर इस कृति को और भी अधिक उपयोगी बना दिया है। दोनों महानुभावों का इस कृति के लिए जो महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है उसके लिए हम उनके हृदय से आभारी हैं।

जिनेन्द्र पूजन गृहस्थ के षट् आवश्यक कर्तव्यों में सर्वप्रथम कर्तव्य है। पापों से बचने हेतु वीतराग भाव के पोषण हेतु यही एकमात्र आलम्बन है। इसीलिए समाज में हजारों वर्षों से भाव

एवं द्रव्य पूजन की परम्परा चली आ रही है। अनेक प्राचीन एवं अर्वाचीन कवियों ने भी अपनी काव्य प्रतिभा से विभिन्न प्रकार की पूजाऐं रचकर पूजन साहित्य को समृद्ध करने में अपना योगदान दिया है, इसमें पण्डित द्यानतरायजी एवं पण्डित वृन्दावनदास जी विशेष उल्लेखनीय हैं।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा मुख्य रुप से पूजन-विधान साहित्य का प्रकाशन किया जाता है। अब तक 'बृहज्जिनवाणी संग्रह' के अतिरिक्त इन्द्रध्वज मण्डल विधान, सिद्धचक्र मण्डल विधान, बृहद् आध्यात्मिक पाठ संग्रह, पंच परमेष्ठी विधान, पंचकल्याणक महोत्सव पूजन,श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक पूजा, चौबीस तीर्थंकर पूजन-विधान, विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजन, शान्ति विधान, एक सौ सत्तर तीर्थंकर
विधान, बीस तीर्थंकर विधान, कल्पद्रुम मण्डल विधान, पंचमेरु नन्दीश्वर विधान, रत्नत्रय पूजन-विधान जैसी अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का तो क्या परिचय दिया जाए,सम्पूर्ण जैन समाज इसके क्रिया कलापों से भली भाँति परिचित हो गई है। इस संगठन का प्रमुख उद्देश्य युवा वर्ग में तत्व के प्रति रुचि जाग्रत करना है। १ जनवरी १६७७ से स्थापित इस संगठन की देश भर में वर्तमान में ३१६
शाखाऐं कार्यरत हैं तथा १५३६५ सदस्य बनाए जा चुकेहैं।

अपने उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु संस्था द्वारा साहित्य प्रकाशन, शिक्षण-शिविरों
का आयोजन, प्रवचन प्रसार योजना, कार्यकर्ता सम्मेलन, वार्षिक अधिवेशन,शाखाओं एवं सदस्यों का सम्मान, ग्रुप शिविरों का आयोजन जैसे महत्वपूर्ण कार्य किए जा रहे हैं। कविवर बनारसीदास चतुर्थ जन्म शताब्दी समारोह,
कुन्दकुन्द द्विसहस्राब्दी समारोह जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से समाज में इसकी अलग पहचान बनी है। कुन्दकुन्द ज्ञानचक्र एवं शाकाहार रथ प्रवर्तन से तत्व प्रचार-प्रसार की गतिविधियों को आशातीत सफलता मिली है। ग्रुप शिविरों के माध्यम से समाज में अपूर्व धार्मिक जागृति उत्पन्न हुई है।

अन्त में प्रस्तुत प्रकाशन की प्रूफ रीडिंग हेतु पण्डित संजय शास्त्री,बडा मलहरा एवं मुद्रण व्यवस्था हेतु विभाग के प्रभारी अखिल बंसल का ह्रदय से आभार मानता हूँ। जिन

महानुभावों ने इस पुस्तक की कीमत कम करने हेतु अपना आर्थिक सहयोग प्रदान किया है वे सभी महानुभाव धन्यवाद के पात्र हैं। इस संकलन के माध्यम से आप अपना जीवन सार्थक बनावें, इसी आशा और विश्वास के साथ---

--ब्र. जतीशचन्द शास्त्री

अध्यक्ष